अमर शहीद प्रजापति श्री रामचंद्र जी विद्यार्थी

13 वर्षीय अमर शहीद विद्यार्थी रामचन्द्र

लेखक

भीम प्रसाद प्रजापति

प्रकाशक

अनुराधा प्रकाशन, नई दिल्ली
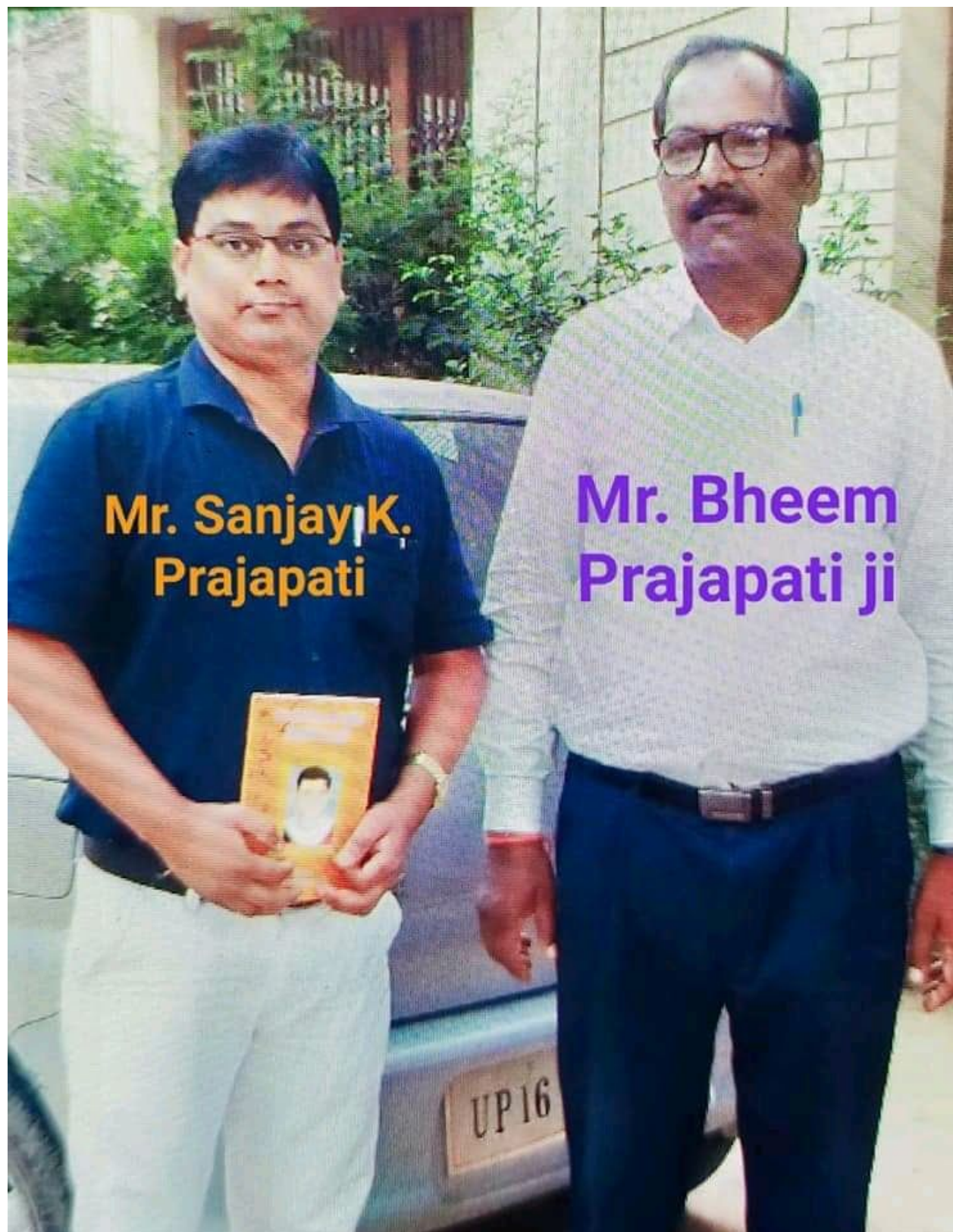
Mr. Sanjay K.
Prajapati
Mr. Bheem
Prajapati ji
UP 16

[अमर शहीद रामचंद्र जी विद्यार्थी प्रजापति के बारे में पोस्ट]

अमर शहीद
श्री रामचन्द्र विद्यार्थी
की प्रतिमा का
अनावरण
माननीय श्री सूर्य प्रताप शाही

आज आजादी के 73साल बाद भी 14अगस्त 2020 को हम 78वां बलिदान दिवस 13वर्ष के वीर विद्यार्थी अमर शहीद रामचन्द्र प्रजापति जी का मना रहे हैं। कोटि कोटि नमन💐💐🙏

(##BIOGRAPHY)
##14 अगस्त सन् 1942 के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी
विद्यार्थी अमर शहीद रामचन्द्र प्रजापति
जीवनी:
जन्म: 01अप्रैल 1929
विद्यालय: अमर शहीद रामचन्द्र इण्टर कालेज बसन्तपुर धुसी, देवरिया
जन्म स्थान: हथियागढ़ नौतन
जिला: देवरिया
मण्डल: गोरखपुर
राज्य: उत्तर प्रदेश

------शहीद रामचंद्र विद्यार्थी का जन्म 1 अप्रैल 1929 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के देसही विकास खण्ड के नौतन हथियागढ गांव में हुवा था । इनके बाबा जी (स्व. श्री भरदुल प्रजापति)एक सामाजिक व्यक्ति थे । इनकी माता का नाम स्व.श्रीमती मोतीरानी पिता का नाम स्व.श्री बाबूलाल प्रजापति था पिताजी मिट्टी के बर्तन बनाने का काम करते थे, इनके चार पुत्र: और उनके परिवारिक सदस्यगण---
1-शहीद रामचंद्र प्रजापति (अविवाहित) शाहिद जी के आश्रित अनुज भ्राता स्व.श्री गोपीनाथ प्रजापति, श्री रामबाड़ाई प्रजापति और सबसे छोटे भाई श्री रामपरोजन प्रजापति जी है।
शहीद जी के अनुज भाइयों के पारिवारिक सदस्य गण
2-स्वर्गीय गोपीनाथ प्रजापति
पुत्र-पुरुषोत्तम प्रजापति (BRD इण्टर कॉलेज)- पुत्र (संजय प्रजापति(Cardiovascular Medical Device) ,रजनीश प्रजापति(NRI), राजेश प्रजापति) ,परमहंस प्रजापति (प्राइवेट जॉब)-पुत्र (सुनील प्रजापति)
हरिवंश प्रजापति -पुत्र (रिशु प्रजापति)
3- रामबड़ाई प्रजापति(रिटायर्ड प्रधानाध्यापक प्राथमिक विद्यालय)
पुत्र -दिनेश प्रजापति (रिटायर्ड थल सेना वर्तमान में उत्तर प्रदेश पुलिस में कार्यरत) पुत्र-(सोनू प्रजापति,विशाल प्रजापति),उमेश चंद्र प्रजापति (रिटायर्ड थलसेना वर्तमान में SBI गार्ड) पुत्र- (पियूष प्रजापति)
बृजेश प्रजापति (थलसेना लांस नायक),जितेंद्र प्रजापति (प्रवक्ता हिन्दी इंटर कालेज),हरीओम प्रजापति (अध्यापक जूनियर हाईस्कूल)
4-रामपरोजन प्रजापति (कृषि) पुत्र(दीनदयाल प्रजापति NRI) थे।
बालक रामचंद्र बचपन से ही तेजस्वी थे और देश के प्रति उनके अन्दर देशभक्ति कूट कूट के भरी हुई थी ।

इनके पिता बाबूलाल प्रजापति जी खेती बाड़ी के साथ अपना पैतृक व्यवसाय मिट्टी के बर्तन बनाने का काम भी करते थे, जिससे परिवार का जीविकोपार्जन भी हो सके। बालक रामचन्द्र बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि वाले थे, जो एक बार कोई भी चीज सुन लेते पढ़ लेते फिर उन्हें कभी नही भुलता।उनकी स्मरण शक्ति बहुत ही तेज थी। उनकी बाल्यावस्था की प्रारम्भिक शिक्षा गांव के बगल के ही गांव सहोदरपट्टी में प्रार्थमिक विद्यालय में हुई,बचपन मे ही इनकी पढ़ने की रुचि देखकर वहाँ के गुरुजन अचम्भित हो जाते थे।और घर पर आकर इनके पिताजी बाबूलाल जी से कहते कि यह जीवन मे जरूर नाम करेगा इस परिवार का क्योंकि इसके लक्षण बाकि बच्चों से अलग है, यह बात उनके पिताजी सुनकर मन ही मन प्रफुल्लित हो जाते थे, और ईश्वर को धन्यवाद देते थे। सहोदरपट्टी में इनकी प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त होने के बाद भी परिवार की आर्थिक स्थिति न सही होते हुए भी उन्होंने बालक रामचन्द्र का माध्यमिक शिक्षा के लिए गाँव से कोसों दुर लगभग 18किमी दुर बसन्तपुर धुसी गाँव के विद्यालय में दाखिला करवाया।और बालक रामचन्द्र बगल गाँव के कुछ लड़कों के साथ सुबह अपने माता पिता का चरण स्पर्श कर विद्यालय जाया करते थे।विद्यालय जाते समय रास्ते मे एक छोटी नदी (गंढक) भी पड़ता था, उस समय उसमें नाव के द्वारा वहा के मल्लाह पार कराते थे, और बदले में बच्चों के घरों कुछ राशन लिया करते थे, उनकी भी बड़ी दयनीय स्थिति थी, यह देखकर मन ही मन बालक रामचन्द्र दुःखी होते थे, और उस समय अगर घर से माँ के द्वारा कुछ पैसे मिलते थे तो वह उन मल्लाहों को दे देते थे, और घर पर नही बताते थे
।

और कभी कभी बच्चे घर आकर बता देते तो माँ से डाँट भी पड़ती थी कि जब उनको हम राशन देते है, तो तुम अपना पैसा क्यों देते हो, तो वह इतना कहकर बात टाल देते कि जाने दो माँ हम किसी को दुःखी नही देखना चाहते है, और यह बात उनके पिता सुनकर मन ही मन खुश होते कि इतना छोटा है,इसके अन्दर इतनी बुद्धि कहा से आती है।धीरे धीरे उनकी छठवीं कक्षा समाप्त हुई, छठवीं कक्षा में अव्वल आने पर उनके गुरुजनों ने उनके पिताजी को बुलवाकर बच्चे की काफी प्रसंशा की, और उनके द्वारा भी वही शब्द दुहराये गये, जो प्रारम्भिक शिक्षा के समय गुरुजनों ने कहा था कि आपका बच्चा बहुत ही कुशाग्र बुद्धि वाला है, आगे चलकर जरूर आप सभी का नाम रोशन करेगा।पिता बाबूलाल जब यह बात बार बार सुनते थे तो बालक रामचन्द्र के शिक्षा पर और ध्यान देने लगे, और बच्चे की प्रसंशा सुन उनका मन ही मन सीना चौड़ा हो जाता था।जब वह सातवीं कक्षा में पहुँचे तब तेरह वर्ष के हो चुके थे।

वह विद्यालय में बहुत ही मेधावी और अव्वल दर्जे के विद्यार्थी थे।
बालक रामचन्द्र पढ़ाई के बाद जब भी समय मिलता था तब वह अपने पिता बाबूलाल जी के काम मे हाथ बटाते थे, जैसे खेती बाड़ी का काम हुआ या मिट्टी के बर्तनों का व्यवसाय ,उनके पिता जब बगल के गाँव में मिट्टी के बर्तन बाँटने जाते थे तो वह भी साथ में जाया करते थे, तो इस तरह भी देश के बारे कुछ न कुछ घटनाये सुनने को मिलती थी, और वह उस समय अंग्रेजों के अत्याचार को सुनकर क्रोधित हो जाते थे, फिर मन मे आक्रोशित होकर बुदबुदाने लगते थे कि छोड़ेंगे नही इन अत्याचारियों को, यह देख बाबूलाल जी घबरा जाते थे, कि क्या हो गया बच्चे को फिर उनको समझा कर शान्त करते थे कि यह सब एक दिन जरूर भाग जायेंगे बेटा, हम लोग लगे हुये, और पूरा देश लगा हुआ है इन अंग्रेजों को भगाने के लिये घबराओ नही, जिस तरह देश की सेवा में रुचि रखते थे उसी तरह घर के कामों में भी रुचि रखते थे, जैसे एक बार बालक रामचन्द्र अपने पिता के साथ खेत गये तो खेत की सिंचाई हो रही थी,तो किसी कारणबस उनके पिता बाबूलाल उनको खेत में ही छोड़कर चले आये और बोले कि बेटा मैं अभी आऊँगा तब तक खेत का पानी देखते रहना कही इधर उधर न बहे, बालक रामचन्द्र ने बोला ठीक है पिताजी मैं पूरा ख्याल रखूँगा आप जाइये, लेकिन किसी कारणबस जल्दी वापस नही आये उनके पिता जी, अब बालक रामचन्द्र खेत के

चारों तरफ घुम के देखने लगे कही पानी तो नही बह रहा, लेकिन संयोग से एक जगह खेत का मेड़ टूट गया और पानी रुक ही नही रहा था, बालक रामचन्द्र परेशान हो गये, अन्त में उनके गुरू के द्वारा भक्त आरुणि की कहानी याद आयी और वह खेत के मेड़ पर ही लेट गये, और पानी बहना थम गया, तब तक गाँव एक व्यक्ति ने जब इनको देखा तो वह उनके पिता बाबूलाल से बोला कि कि खेत मे जल्दी जाइये नही तो आपका लड़का रामचन्द्र बीमार हो जायेगा, तब उनके पिता बाबूलाल जी दौड़े दौड़े आये तो देखा बालक रामचन्द्र खेत का पानी रोकने के लिए मेड़ पर ही लेट गया है, तो फौरन उनको उठाये और मेड़ पर मिट्टी रखकर पानी रोका, और रामचन्द्र कांप रहे थे उनको जल्दी घर लाकर, गरम कपड़े में लिटाया, और सोचने लगे कि इतना छोटा बच्चा, इस तरह का काम कैसे कर जाता है एक तरफ उनके साहस को देख खुश और दूसरी तरफ थोड़ा ठण्ड लगने से बालक के तबीयत खराब होने से नाखुश भी, ऐसे ही बालक रामचन्द्र द्वारा अपने बाल्यावस्था में अचम्भित कर देने वाला कार्य करते थे, जिससे सभी चौक जाते थे।वह हमेशा किसी न किसी से कुछ न कुछ प्रेरणा लेते रहते थे, और उसे करके दिखाते भी थे।वह परिवार में बड़े होने के नाते सबके चहेते भी थे, वह सभी के प्रति बहुत ही आज्ञाकारी स्वभाव रखते थे, परिवार में अपनी माँ से बड़ा लगाव रहता था उनका, खाना खाते समय वह परिवार की आर्थिक समस्याओं को देखकर अपनी माँ से बोलते थे कि माँ मैं बड़ा होकर बहुत पैसा कमाऊँगा, आप सभी का सारा दुख दूर कर दूँगा, यह बात सुनकर माँ के आँखों मे आँसू आ जाते थे, और बालक रामचन्द्र को गले से लगाकर फफक पड़ती थी, और कहती थी ठीक है बेटा जल्दी से बड़ा होकर मेरा दुःख दुर करो, क्योंकि हर माँ की यही तमन्ना भी होती है कि उसका बेटा बड़ा होकर अच्छा पैसा कमाये और बड़ा आदमी बने, लेकिन ईश्वर को कुछ और ही करवाना था बालक रामचन्द्र से अब यह किसे पता, उस समय लोग पुरोहितों को हाथ दिखाने में भी विश्वास रखते थे लोग, एक बार गावँ के पंडित जी आये पोथी पतरा लेके आये तो उनकी माँ ने तस्सल्ली के लिए बालक रामचन्द्र का हाथ दिखाया तो पंडित जी ने बोला दुलहिन यह बच्चा साधरण नही है, इसकी हाथ की लकीरें बता रही है कि यह कुछ बड़ा करेगा, और बालक रामचन्द्र की बातों से भी कोई भी प्रभावित हो जाता था। बालक रामचन्द्र जी के दादा जी भर्दुल प्रसाद प्रजापति जी थे, जो खुद एक बहुत बड़े पहलवान थे अपने जमाने में, जो हमेशा सुबह उठकर अपने तीनों बच्चों के साथ अखाड़े में जाते थे, और उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए पहलवानी सिखाते थे, उस समय ऊंच नीच का भेदभाव ज्यादा था, इसलिए बच्चों को ज्यादा पढ़ा नही पाये किसी तरह उस समय जमींदारी प्रथा से लड़ते हुये भी अपने बच्चों को प्रार्थमिक शिक्षा दिलवायी, और भर्दुल प्रसाद प्रजापति जी निर्भीक स्वभाव के होने के वजह से वह जमींदारों के दलालों से डरते नही थे, पहलवान होने के नाते अन्याय के खिलाफ लड़ जाते थे, और यही शिक्षा अपने तीनों बच्चों को भी दी, वह खुद ही अपने समय के पहलवान और सामाजिक ,दयावान व्यक्ति थे, उनके तीन बच्चे थे ,बाबूलाल, दमरी और मंगल प्रसाद प्रजापति, जिसमें सबसे बड़े बाबूलाल जी थे वह समाजिक सेवा और घर सम्भालने खेती बाड़ी का सारा जिम्मा उनके ऊपर था, वह नेतागिरी में भी रुचि रखते थे, और दूसरे नम्बर के भाई दमरी प्रसाद प्रजापति पहलवान भी थे ,पहलवानी करते करते ब्रिटिश फौज में भर्ती हो गये।
जिसे उस समय रंगरूट भी बोला जाता था।और तीसरे नम्बर वाले मंगल प्रसाद प्रजापति समाजिक कार्य और पहलवानी में रुचि रखते थे। जब तीनों बच्चे अपने अपने पैरों पर खड़े हो गये, और भर्दुल प्रसाद प्रजापति जी भी उम्र के साथ अस्वस्थ होते गये, और एक दिन तीनों बच्चों को छोड़ परमात्मा में विलीन हो गये।अब पिता जी के स्वर्गवास सिधारने के बाद परिवार की जिम्मेदारी परिवार में सबसे बड़ा होने के नाते बड़े बेटे बाबूलाल जी पर आ गयी।फिर भी इस संकट की घड़ी में उन्होंने धैर्य और साहस नही खोया, और इस दुःख की घड़ी में बाबूलाल जी की धर्मपत्नी मोतिरानी देवी ने उनका साहस बढ़ाया, और परिवार की जिम्मेदारी निभाने में कदम कदम पर साथ निभाया।वह सरल स्वभाव और कर्मठ महिला थी, जो बाबूलाल जी के साथ मिलकर मिट्टी का बर्तन बनवाती थी, और बेचने के लिए गांवो में भेजा करती थी, जिससे गावँ से खाने के लिए दो टाइम का कुछ न कुछ मिल जाता था।उसी से परिवार का भरण पोषण होता था, उस समय परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय हो गई

थी।धीरे धीरे समय बीतता गया।और एक दिन उनके परिवार में इस वीर बालक रामचन्द्र का जन्म मोतिरानी देवी के कोंख से हुआ।परिवार में पहला बच्चा देख बाबूलाल जी और परिवार के सदस्यों में खुशी का ठिकाना न रहा।और धीरे धीरे बाबूलाल जी के तीन लड़के और हुये, जिनका नाम क्रमशः गोपीनाथ, रामबड़ाई और सबसे छोटे रामपरोजन हुये।जिसमें सबसे बड़े रामचन्द्र थे, परिवार में बड़े होने के नाते उनसे सबका लगाव और प्यार बहुत ज्यादा था।गांव के कुछ लोग बताते है कि अभी शहीद जी का जन्म नही हुआ था, उसके पहले से ही उनके पिता बाबूलाल प्रजापति जी आजादी के दीवाने थे। उस समय अंग्रेजो के खिलाफ संघर्ष करने में जुट गए थे।उस समय कांग्रेस कमेटी के द्वारा क्रांतिकारी संगठन बनाया गया था।जिनके खाने पीने की जिम्मेदारी शहीद जी के पिता बाबूलाल जी को सौंप दी गयी थी।जो मिट्टी का बर्तन बनाकर पास के सभी गांवों में पहुँचा देते थे।जिसमें लोग मुट्ठी भर अनाज इकठ्ठा करते थे, फिर वही अनाज शाम को क्रांतिकारियो तक पहुँचाया जाता था।जिससे उनके खाने की व्यवस्था में उपयोग होता था। शहीद जी के दादा स्व.श्री भरदुल प्रजापति द्वारा बराबर प्रेरणा देश सेवा करने की मिलती रहती थी। शहीद जी के चाचा दमरी प्रजापति उस समय देहरादून में ब्रिटिश फौज में हवलदार थे।इनके द्वारा भी बहुत सारा संदेश जोश भरा समय समय पर संघर्ष के लिए मिलते रहता था। मतलब शहीद जी का परिवार पहले से ही देशभक्ति के द्वारा देश सेवा करते रहे।(और आज भी शहीद जी के 3भतीजे आर्मी से रिटायर्ड हुए है, जिनमें से बड़े भतीजे उ.प.पुलिस में सेवा दे रहे है।)
उसी दौर में विद्यार्थी रामचन्द्र अपनी माँ के कोंख में पल रहे थे, और उसी समय कुछ देशद्रोहियों के द्वारा उनके पिता जी के बारे में पुलिस को सूचना दे दी गई थी।कि यह क्रांतिकारियो की सेवा करता है।फिर बीच मे कई बार उन्हें पुलिस द्वारा प्रताड़ित होना पड़ा ,लेकिन फिर भी वह साहस के साथ देश सेवा में लगे रहते थे।शहीद जी के पिता बाबूलाल जी गरीबी के कारण चौथी कक्षा तक पढ़ ही पाए थे।
फिर एक ओ दिन आ ही गया, 1अप्रैल सन 1929 को शहीद रामचन्द्र जी का जन्म हुआ। परिवार में इकलौता पुत्र होने के नाते परिवार काफी खुशनुमा माहौल था।फिर उसी समय शहीद जी के चाचा जो ब्रिटिश फौज में थे वह घर आये थे। और उन्होंने ड्यूटी जाते समय शहीद जी आशीर्वाद दिया और अपने भाई से बोले कि इसको देश सेवा की प्रेरणा जरूर दीजियेगा।मैं भी अंग्रेजों से तंग आ चुका हूँ। और जगह जगह हिन्दुस्तानी सिपाहियों के साथ बहूत बुरा व्यवहार किया जा रहा था।अंग्रेजो का अत्यचार अपने चरम सीमा पर था।इधर बालक रामचन्द्र धीरे धीरे बड़े हो रहे थे, और इस बालक को अपने माँ से भी हमेशा यही प्रेरणा मिला कि बेटा खूब पढ़ो और पढ़कर घर का नाम रोशन करो और खूब कमाओ, क्योंकि उस समय परिवार का बहुत ही बुरा दशा था किसी तरह से जीविकोपार्जन हो रहा था, यह सब देख बालक कभी अपने लक्ष्यों से विचलित नही हुये। तब तक धीरे धीरे विद्यार्थी रामचन्द्र अब 5वर्ष के हो गये थे।और उस समय गाँव के बगल गाँव सहोदरपट्टी में प्राथमिक विद्यालय में इनकी शिक्षा सुरु हुई।वहाँ पर भी छुआ छूत ऊँच नीच वाली व्यवस्था विद्यमान थी।उस समय वहाँ के हेडमास्टर श्री भुटेली पण्डित जी थे।फिर प्राथमिक शिक्षा के बाद आगे की शिक्षा के लिये गावँ हथियागढ़ से लगभग 18या 20किमी दूर बसन्तपुर धुसी में हुआ।वहाँ के प्रधानाचार्य श्री यमुना रावत जी थे। जो प्रखर विद्वान और ओजस्वी वक्ता थे।वह विद्यालय उस समय गाँधी जी के नाम से था। जब उस विद्यालय में नामकरण करवाने उनके पिता बाबूलाल जी ले गये तो सबसे पहले वहा के प्रधानाचार्य यमुना रावत जी द्वारा जब बच्चे का साक्षत्कार हुआ, उन्होंने पूछा किसलिए आये हो पढ़लिखकर क्या बनोग।
, तो उस बालक यही जवाब था कि आप जो बनाना चाहोगे वही बनूँगा, पढ़लिखकर बहुत बड़ा आदमी बनूँगा और देश की सेवा करूँगा।यह सुन यमुनारावत जी थोड़े देर अचम्भित रह गये और उन्होंने कहा कि आपका बच्चा साधारण बच्चा नही है इसके लक्षण कुछ कर गुजरने जैसा है, यह जरूर एक दिन हमारे विद्यालय का नाम रोशन करेगा।और यह कुशाग्र बुद्धि वाले बच्चे ने एक समय ऐसा कर भी दिखाया जो कल्पना से परे है, और बालक का नामांकन उस विद्यालय में हो गया, उस समय गावँ से कुछ बच्चे भी जाते थे, जो उच्च वर्ग और पैसे वाले परिवार

से थे, इन सबके बीच बालक रामचन्द्र ही सबकों साथ लेकर विद्यालय जाते थे, एक बार की बात है कि गाँव का कोई विद्यार्थी साथ मे स्कूल जा रहा था तो रास्ते मे छोटी नदी पड़ती थी, जिसे नाव के द्वारा पार करना पड़ता था, तो संयोग से उस दिन नावचालक नही आया था, तो अब सब बच्चें कहने लगे कि रामचन्द्र आज स्कूल नही चला जायेगा, चलो इधर ही खेलकर शाम तक घर चला जायेगा, तो बालक रामचन्द्र भड़क गये और बोले मैं अपने माँ बाप से यही बताकर आया हूँ कि स्कूल जा रहा हूँ तो मैं झूठ नही बोलूँगा, मैं तो स्कूल जाऊँगा चाहें कुछ भी हो जाय, अन्त में बालक रामचन्द्र नदी तैर कर पार करके स्कूल गये, और वह विद्यालय आवासी भी था, इसलिए कभी कभी विद्यालय में ही रुक जाया करते थे बच्चे और रात में वहां देश के क्रांतिकारी भी इकट्ठा होकर परिचर्चा भी करते थे, तो बालक रामचन्द्र उस परिचर्चा को बड़ा ध्यान से सुनते थे कि अंग्रेजों का देश मे कितना जुल्म बढ़ रहा है, और कभी कभी इस बात का जिक्र अपने माँ बाप से भी करते थे तो उनको डाँट पड़ती थी, कि तुम केवल पढ़ाई पर ध्यान दो।,विद्यार्थी रामचन्द्र प्रखर बुद्धि होने के कारण यहाँ भी गुरुजनों के बीच उनकी सराहना की जाने लगी।वह गुरुजनों के द्वारा धीरे धीरे प्यार और सम्मान पाने लगे।रोज सुबह घर से गरीबी के कारण सुखी रोटी खाकर 20किमी डेली स्कूल आते जाते थे। परन्तु उनकी माँ अपना हिस्सा भी बचाकर विद्यार्थी रामचन्द्र के लिए रखती थी।कि बेटा स्कूल से आएगा तो खायेगा।तब माँ की और घर की हालात देखकर कहते थे कि जब मैं बड़ा होऊंगा तो खूब सारा पैसा कमाऊँगा।और सबको अच्छा भोजन कराऊंगा, यह बात सुनकर माँ कि आँखे नम हो जाती थी।उस देश के क्रन्तिकारियों द्वारा कांग्रेस कमेटी बनायी गयी थी जिसके सदस्य बाबूलाल जी भी थे, वह अगल बगल के गांवों में मिट्टी का एक बर्तन बनाके हर घरों में एक एक दे देते थे, और उनसे क्रन्तिकारियों के लिए उसमें सभी से एक मुट्ठी राशन प्रतिदिन डालने को बोल आते थे।और जब क्रन्तिकारियों की गुप्त सभा होती थी तो वही इकट्ठा किया हुआ राशन से उनके भोजन का प्रबन्ध करवाते थे। यह बात गाँव के ही किसी व्यक्ति द्वारा पुलिस को खबर कर दी गयी थी और एक बार पुलिस द्वारा उनके पिता बाबूलाल जी को धुप में उनके पीठ पर ईंट रखकर उनसे कहा कि दुबारा क्रांतिकारियो की मदद तो नही करोगे न।यह घटना इनको अन्दर तक झकझोर दिया अपने पिता से पूछे कि यह पुलिस वाले आपको इतना मारते क्यों है।मैं बड़ा होऊंगा तो इन सबको गोली मार दूँगा।पिता जी के द्वारा समझाने पर कि इनसे बचकर रहना हम इनके गुलाम है, माता जी भी इनको समझाती थी। बालक रामचन्द्र को इतनी छोटी उम्र में गीता का श्लोक भी याद था।और उस श्लोक से बड़ा प्रभावित रहते थे, विद्यालय में आये दिन रात को क्रन्तिकारियों द्वारा गुप्त सभा होती थी, तो विद्यालय आवासीय होने के कारण कभी रुकना पड़ता तो वह चोरी से उस गुप्त सभा की बाते सुनते थे, और इससे देश की समस्याओं का का पता चलता था उनको कि कहा क्या हो रहा है।वह भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस से काफी प्रभावित थे।वह हमेशा अपने गुरुजनों से कहते थे कि भारत माँ को आजाद कराने के लिये हम सबको खून का बलिदान देना ही पड़ेगा।अब यह आर पार की लड़ाई है।भारत माता के इज़्ज़त का सवाल है और मैं जीते जी कभी भी भारत माँ के सर को झुकने नही दूँगा ।वह मन ही मन आजादी के प्रति दृढ़ संकल्पित हो गये थे।तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा, और सर फरोसी की तमन्ना अब हमारे दिल मे है, देखना है जोर कितना बाजुवे कातिल में है, यह देश भक्ति स्लोगन उनके दिलों दिमाग में बैठ गया था।उससे बहुत प्रभावित हुये वह, उस समय हर जगह अंग्रेजों द्वारा देश के लोगो पर जुल्म ढाया जा रहा था, आये दिन कही न कही हज़ारों लाखों लोगों की मौत की खबर सुनाई देती थी।

बालक रामचन्द्र यह सब सुनकर बड़ा दुःखित होते थे, और घर जाते थे तो न मन से खाते थे न बच्चों के साथ खेलते थे, दिन रात वही देश को लेकर बेचैनी रहती थी कि क्या करें ,क्या न करें, फिर अपनी माँ मोतिरानी की गोद में बैठकर कुछ देर इधर उधर की बाते करते, और माँ के गोंद में ही सो जाते थे, फिर अचानक रात में उठकर बड़बड़ाते थे कि नही छोडूंगा किसी को भी गोली मार दूँगा, अंग्रेजों भारत छोड़ो।

उसी समय विद्यालय पर देश के क्रन्तिकारियों के द्वारा अंग्रेजो से संघर्ष करने की चर्चा चल रही थी।उस समय विद्यार्थी रामचन्द्र 13वर्ष 4माह के हो गये थे।सन 1942 की आजादी की लड़ाई अपने चरम सीमा पर थी।अंग्रेज घबरा गए थे जगह जगह आन्दोलन खून खराबा चल रहा था।13 अगस्त का दिन था उसी समय एक क्रांतिकारी सभा की बैठक विद्यालय पर चल रही थी।और उस विद्यालय के प्रधानाचार्य ने सभी छात्रों और गुरुजनों को बताया कि कल जनपद देवरिया के कचहरी पर भारतीय झण्डा फहराना है।
बैठक मे विचार हुआ कि तिरँगा किसके हाथ मे रहेगा।तब वहां पर किसी ने हामी नही भरी, फिर प्राचार्य श्री यमुना रावत जी ने कहा कि तिरँगा मेरे हाथ मे रहेगा।तभी विद्यार्थी रामचन्द्र ने आगे बढ़कर गरज कर बोला कि तिरँगा मेरे हाथ मे रहेगा ।मैं आगे आगे लेकर चलूँगा।उस दिन 14अगस्त की सुबह ही सभी को बुलाया गया था।विद्यार्थी रामचन्द्र भी अपनी माँ को रात में ही सब कुछ बता दिये थे।और भोर में सपना देखा कि अंग्रेज लोगों को मार पीट रहे है और अचानक भारत माता की जय बोलते हुए उठ गए थे।फिर माँ घबरा गई थी। सुबह मना करती रही लेकिन नही माने और माँ के पैर छूकर बोले शाम तक वापस आ जाऊँगा माँ, माँ उनको पूरे हाथों से भीच लिया और चूमने लगी और बोला कि जल्दी आ जाना बेटा।

14अगस्त सन् 1942 का स्वर्णिम दिन था।यह 14वर्ष का बालक उसी क्रन्तिकारी उत्साह और जज्बे से विद्यालय के साथियों के साथ वंदेमातरम् और इन्कलाब जिंदाबाद के नारों के साथ यह दल पटनवा पुल पर पहुँचा। सुबह का समय था वही पुल पर सभी ने दातुन कुल्ला किया।वही समीप रामपुर कारखाना के पास खेत मे एक किसान कुदाल चला रहा था तभी उसके कुछ कहने पर विद्यार्थी रामचन्द्र ने कहा कि चाहे मेरा काटकर हाथ मे ले लो लेकिन वापस घर नही जाऊँगा।बचते बचाते यह टोली कुरना मिल होते हुए रेलवे लाइन से कंकड़ गिट्टी लेकर देवरिया कचहरी पहुँचे।उस समय कचहरी रामलीला मैदान के पास थी।और उस समय देवरिया कचहरी की दिवार ऊँची थी और उसी पर ब्रिटिश गवरमेंट का जैक फहर था।जब सभी जब सभी छात्र पहुँच गये । अंग्रेजों भारत छोड़ो और भारत माता की जय, इन्कलाब जिन्दाबाद । वह ब्रिटिश जैक जो विद्यार्थी रामचन्द्र के नजर में चुभ रहा था। तत्कालिक ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट ने लाठीचार्ज का आदेश जारी कर दिया। और उसी बीच मे मौका पाकर अपने दोस्तों के सहयोग से विद्यार्थियों ने पिरामिड बनाकर विद्यार्थी रामचन्द्र को कचहरी के दिवार पर चढ़ा दिया।फिर विद्यार्थी रामचन्द्र ने ब्रिटिश जैक उतारकर फाड़ दिया और अपने भारत देश का तिरँगा फहरा दिया।और उस समय वहा पर ब्रिटिश गवरमेंट के उमराव सिंह मजिस्ट्रेट थे।उनके हवाई फायर और लाख मना करने पर भी विद्यार्थी रामचन्द्र नही माने और यह देख विद्यार्थी रामचन्द्र ने मजिस्ट्रेट को डाँटा अरे कुत्ते गोलियां क्यों बरबाद कर रहे हो मारना है तो मेरे सीने में मार, अपने कुर्ते का बटन तोड़ दिया और बोला की चलाओ गोली मेरे सीने में मैं नही डरता अँग्रेजो के गोलियों से और इन्कलाब जिन्दाबाद और भारत माता की जय से आसमान गूँजता रहा।और विद्यार्थी वही डंटे रहे आखिर में ब्रिटिश हुकुमत के ऑर्डर पर मजिस्ट्रेट उमराव सिंह ने 4-5 गोलियां विद्यार्थी रामचन्द्र के सीने में मार दी।और विद्यार्थी रामचन्द्र जमीन पर गिर गए, ऐसा लगा जैसे वह भारत माँ की धरती को बार बार चुम रहे थे और नमन कर रहे थे। उसी समय वहा लाठी चार्ज कर दिया गया जिससे भगदड़ मच गयी ।उनके सीने में गोली लगने पर गरम खून का फौब्बारा बह रहा था।उसके बाद उनको लच्छीराम पोखरे पर लाया गया।वे अभी जिन्दा थे। उसी समय उनकी एक फोटो भी खिंची गयी।उसके बाद उनको सदर अस्पताल ले जाया गया।अगर डॉक्टर चाहता तो ऑपरेशन करके गोली निकाल सकता था।लेकिन उसने गोरखपुर जिला मुख्यालय रेफर कर दिया।विद्यार्थी रामचन्द्र ने सबको मना करते हुए कहा कि मुझे कही नही जाना है।क्योंकि मेरी माँ ने घर पर रोका था कि आज तुम स्कूल नही जाओगे ,मैंने माँ को कहा था कि "माँ शाम तक मैं घर आऊंगा" अतः मेरे मरने के बाद मेरी लाश मेरे गावँ हथियागढ़ जरूर पहुँचा देना क्योंकि मैंने माँ से वादा किया है।

फिर उनको वहाँ से देवरिया के तालाब पर लाया गया।और वह अभी जीवित थे तभी उनके गुरु श्री परमहँस पाठक जी जो बसन्तपुर धुसी के अधयापक थे, उन्होंने विद्यार्थी रामचन्द्र से पूछा बेटा तुम्हारी अन्तिम इच्छा क्या है ,विद्यार्थी रामचन्द्र ने कहा कि मेरे शव को भारतीय तिरँगे में लपेटकर शवयात्रा निकलियेगा गुरुजी ताकि दूसरे छात्र भी देश पर मर मिटने की प्रेरणा ले। और अपनी अंतिम इच्छा है कि मुझे गीता का श्लोक सुना दीजिये।और अपने गुरु से गीता का श्लोक सुनते ही वह अपनी जन्म देने वाली माँ के गोंद में न सोकर हमेशा के लिये भारत माँ की गोंद में सो गए। उसके बाद उस समय संसार नामक अखबार में उनकी फोटो सहित खबर छपी। और वहा संयोगबस उनके पिता बाबूलाल जी किसी काम से देवरिया ही गये थे कि उनको पता चला कि उनके बेटे को गोली लगी है।तो वह दिल पर पत्थर रखकर भागे भागे घर आये ,और घर पर किसी को कुछ नही बताया एक कोने में बैठकर अन्दर अन्दर फुट फुट के रो रहे थे।विद्यार्थी रामचन्द्र के शव को उनके गावँ ले जाया गया जहाँ उनकी माँ उनका इन्तज़ार कर रही थी कि स्कूल से मेरा बाबू रामचन्द्र आया नही। इंतजार करते करते शाम के 5बज गये।शाम को विद्यार्थी रामचन्द्र का जयघोष करते हुऐ जब उनकी लाश घर के समीप पहुँचा तब माँ को लगा कि आज कुछ अच्छा काम किया है इसलिए जयघोष हो रहा होगा । लेकिन जब शव दरवाजे पर पहुँचा ।
माँ की आँखे उनको ढूढ़ रही थी।और उनके पिता जी जो इस घटना के समय देवरिया में ही थे।लेकिन सभी ने उनको पहले ही घर भेज दिया था।जो बालक रामचन्द्र की माँ को कुछ नही बताये थे।और चुपचाप एक किनारे आँखों में आँसू और ह्रदय में दर्द दबाये बैठे इन्तज़ार कर रहे थे तब तक विद्यार्थी रामचन्द्र की जयकार होते हुए एक भीड़ आ रही थी।जब यह आवाज़ माँ ने सुना तो वह यह सोचकर खुस थी कि मेरा बाबू आज कुछ अच्छा काम किया है।इसलिये इतना जयकार हो रहा है।लेकिन सच्चाई कुछ और थी जो विद्यार्थी रामचन्द्र के पिताजी के आँखों को भी नही पढ़ पायी। और जब विद्यार्थी रामचन्द्र जी का शव दरवाज़े पर आया तो माँ के कलेजे फट गए और आँख के सामने अँधेरा छा गया।और बोली की वादा पूरा तो कर दिया लेकिन मुझे छोड़कर क्यों चला गया।उसके बाद तिरंगे में लपेट कर वही हथियागढ़ गावँ के छोटी गंढक पर उनका दाह संस्कार किया गया।फिर सभी बच्चे और गुरुजन अपने घर को चले गए। कुछ दिनों तक उनके परिवार को ब्रिटिश गवरमेंट के द्वारा प्रताड़ित भी किया गया और उनका घर द्वार उजाड़ दिया गया।
अंततः जब देश 1950 में पूर्ण रूप से आज़ाद हुआ तो फिर इस परिवार को सम्मानित किया गया।और उसी समय देवरिया में उनकी याद में स्मृति स्तम्भ बनवाया गया।

उसी समय उस आंदोलन में पुलिस द्वारा लाठी चार्ज के वजह से उनके कुछ सहपाठी पैकौली गांव के बंधू उर्फ धिन्हू और कतरारी के गोपी मिश्र और पास के गाँव सहोदरपट्टी के शिवराज उर्फ सोना सोनार जी उस आंदोलन में चोटिल होने के कारण कुछ समय पश्चात शहीद हो गये।
आजादी मिलने के
11 वर्ष बाद 1958 में नगर पालिका ने रामलीला
मैदान स्मृति-स्तंभ बनवाया। 25 मई को उत्तर
प्रदेश सरकार के तत्कालीन शिक्षा, गृह और
सूचना विभाग मंत्री कमलापति त्रिपाठी ने
स्मारक का उद्घाटन किया। 26 जनवरी 1988
को नगर पालिका अध्यक्ष रामाशंकर प्रसाद
उर्फ रामा बाबू ने इसका जीर्णोद्धार
कराया। संगमरमर से स्मृति-स्तंभ का निर्माण

कराया गया है।
इसके चारो ओर चाहरदीवारी बनवाई गई है।
चाहरदीवारी के अंदर ही अशोक के पेड़ लगवाए
गए हैं।
फिर कुछ वर्षों बाद जब 1947 को देश आजाद हुआ।तब भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व.प.जवाहरलाल नेहरू जी के द्वारा इस परिवार को प्रमाण पत्र मिला, उस समय जब स्व. पण्डित जवाहरलाल नेहरू देवरिया जनपद आये तो अमर शहीद विद्यार्थी रामचन्द्र प्रजापति जी के पिता स्व.श्री बाबूलाल प्रजापति जी को देवरिया के गेस्ट हाऊस पर बुलवाया गया। उस समय चाँदी का एक ग्लास और थाली भेंट किया जिस पर लिखा है।
"विद्यार्थी शहीद रामचन्द्र ने इस चमन को अपने खून से सींचा था"
शहीद जी के परिवार को सरकार द्वारा लगभग 31एकड़ जमीन किच्छा नैनीताल में भेंट किया गया।
लेकिन उस समय परिवार के पास कुछ धन न होने के कारण शहीद जी के पिता स्व श्री बाबूलाल जी के द्वारा अस्वीकृत कर दिया गया।क्योंकि परिवार वैसे ही इतनी आपदा के कारण मजबूर और लाचार था। उस समय शहीद रामचन्द्र जी के अनुज भाइयों की उम्र 11,10,8वर्ष की रही होगी।
शहीद जी जिस विद्यालय में पढ़ते थे उस विद्यालय का नामकरण भी विद्यार्थी अमर शहीद रामचन्द्र प्रजापति जी नाम पर कर दिया गया, उसी समय उनकी एक मूर्ति की स्थापना दिनांक २३/२/१९८३ को भारत के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह के द्वारा किया गया जो वसन्तपुरधुसी विद्यालय में आज भी विद्यमान है।
संयोजक-श्री लल्लन प्रसाद द्विवेदी जी (प्रधानाचार्य)
सह संयोजक-श्री पारस नाथ मिश्रा जी(उप प्रधानाचार्य)
उसकी फोटोज और प्रतिलिपि इसके साथ संलग्न किया जा रहा है।
लेकिन बड़े दुःख की बात है कि आज 70साल से ऊपर होने जा रहा है।लेकिन विद्यार्थी अमर शहीद रामचन्द्र जी के नाम पर देवरिया जिला विकास की ओर अग्रसर है लेकिन उनकी याद में कुछ भी नही बनवाया गया।और न ही कोई साधन चलवाया गया।एक छोटी प्रतिमा तो दूर एक पार्क तक भी नही है।
जिसने हँसते हँसते अपने खून से देवरिया के धरती को सिंचा।
जय हिन्द
जय भारत
💐💐कोटि कोटि नमन💐💐
शहीद जी का पौत्र
(संजय कुमार प्रजापति)

प्रजापति प्रदीप कुमार घोड़ेला

शहीद रामचन्द्रजी का संक्षिप्त परिचय
जन्म तिथि-01-04-1929
शहीद दिवस-14-08-1942
माता-श्रीमती मोतीरानी देवी
पिता-श्री बाबू लाल प्रजापति
ग्रा.-पो.-नौतनहथियागढ़, जि. देवरिया (उ.प्र.)
शहीद होने का कारण-1942 ई. में अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन के समय आप इस
विद्यालय में कक्षा 7 के मेधावी छात्र थे। 14 अगस्त 1942 ई. को स्वप्रेरित सहपाठियों
का नेतृत्व करते हुए आप देवरिया कलेक्ट्रेट के यूनियन जैक को उतारकर ज्योंहि
भारतीय तिरंगा फहराया त्योंहि मजिस्ट्रेट ठाकुर उमराव सिंह ने गोली मारदी। आप
जैसे सपूतों की शहादत ने पूरे भारत देश को आजादी के लिए प्रेरित किया जिसका
परिणाम रहा कि भारत देश 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्र हुआ।
श्री कमलेश शुक्ला
अध्यक्ष
श्रीमती उर्मिला त्रिपाठी,
W/o श्री गोविन्द पति त्रिपाठी
रघुबर जी,
एवं विद्यालय परिवार द्वारा
छतरी निर्माण अक्टूबर 2014

शहीदरामचन्द्र जी

॥ श्री राम मण्डपम् ॥
प्रजापति विकास मंच देवरिया के तत्वावधान में अगस्त क्रांति
अमर शहीद विद्यार्थी रामचन्द्र प्रजापति
कमला प्रसाद प्रजापति
प्रजापति विकास मंच, देवरिया
जनपद देवरिया

शहीदरामचन्द्रजी
मेरा
भारत
महान
2018-8-14 10:40